एक नया अध्याय

पूर्णिमा हेगड़े



सितम्बर 2016 का महीना था। बरसात का मौसम ख़त्म होने को था, जब मैं भारत के एक गैर-लाभकारी संगठन, अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के एसोसिएट कार्यक्रम में शामिल हुई। इसमें एक वर्ष तक कक्षाओं के अवलोकन एवं शिक्षण के माध्यम से सरकारी स्कूल को समझने की प्रक्रिया अनिवार्य थी। हमें सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था में काम करना था जिसमें शिक्षकों के दृष्टिकोण के साथ-साथ विषयवस्तु के सम्बन्ध में उनकी क्षमता को विकसित करना शामिल था। सौभाग्य से मुझे अज़ीम प्रेमजी स्कूल सौंपा गया था।

शिक्षण एक कौशल है जिसे विशेष पेशेवर प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है और मेरे पास ऐसी कोई विशेषज्ञता नहीं थी। इसके अलावा, मैं प्राथमिक विद्यालय में केवल तब तक थी जब मैं खुद वहाँ पढ़ रही थी! प्रारम्भ में, सीखने के दिलचस्प माहौल और उत्कृष्ट विद्यालयीन संस्कृति ने मुझे आकर्षित किया। जैसा कि निर्देश था मैंने केवल अवलोकन किया और सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था की अकादमिक एवं प्रशासनिक प्रक्रिया को समझा।

ऐसा करने के साथ ही मुझे यह एहसास हुआ कि मैं उस जगह पहुँच गई हूँ जहाँ मुझे होना चाहिए। अँग्रेज़ी कक्षाओं के अवलोकन के प्रारम्भिक चरण में बच्चों की रुचियों, उनकी सीखने की क्षमता और एक विदेशी भाषा को पढ़ाते समय शिक्षकों के समक्ष आने वाली चुनौतियों ने मेरी आँखें खोल दीं। यह वह समय था जब मुझे शिक्षण का व्यावहारिक ज्ञान मिला। उसी दौरान, मैंने नली-कली कक्षाओं में पढ़ाना शुरू किया। और तब मैंने स्वयं को एक शिक्षक के रूप में मान्यता दी।

स्वतंत्र रूप से अँग्रेज़ी की कक्षाएँ लेते हुए मुझे अब तीन महीने हो चुके हैं। शुरुआत में, जैसा कि सभी नए शिक्षक मानते हैं, मुझे भी यह समझ में आया कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में, अनुभव काफ़ी महत्त्वपूर्ण होता है और यह 'जितना अधिक हो उतना बेहतर' है। प्रारम्भ में, कक्षा में अनुशासन बनाए रखने में ही बहुत समय लग जाता था, और शिक्षण-प्रक्रिया एवं गतिविधियों के नियोजन के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता था। मैं कक्षाओं के संचालन में असक्षम होने के कारण थोड़ा हतोत्साहित हो गई थी। चूँकि यह अँग्रेज़ी वर्ग था, मैंने केवल अँग्रेज़ी में ही बात की, जिससे विद्यार्थियों ने अपनी रुचि खो दी क्योंकि उनमें से कईयों की समझ में ही नहीं आ रहा था कि उनके चारों ओर हो क्या रहा है। दबाव में आकर मैंने स्थानीय भाषा में पढ़ाना प्रारम्भ किया, लेकिन ऐसा लगा कि यह करके मैं अँग्रेज़ी सीखने के लिए उपयुक्त वातावरण निर्मित करने के अपने उद्देश्य से सभी को दूर ले गई। किसी ने सही कहा है कि केवल रुचि रखने वाला शिक्षक ही बच्चों के लिए सीखना रुचिकर बना सकता है, इसलिए मैंने स्वयं को प्रेरित करने और सीखने के माहौल को विकसित करने का फैसला किया। पहले दो महीनों में बच्चों की प्रारम्भिक समझ यानि कि उनके अधिगम-स्तर के आकलन की प्रक्रिया ने मुझे अधिगम की सही पृष्ठभूमि बनाने में मदद की।

जब हम प्राथमिक स्कूलों में अँग्रेज़ी भाषा की बात करते हैं, तब उसका लक्ष्य बच्चों में अँग्रेज़ी भाषा बोलने और सम्प्रेषण के रूप में अँग्रेज़ी की क्षमता को विकसित करना है। प्रत्येक भाषा की तरह अँग्रेज़ी भी सम्प्रेषण का साधन है। लेकिन भाषा सीखने के चार कौशल–सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना– में मुझे ऐसा लगा कि बच्चों के लिए पढ़ना, बिना समझे हुए भी, शायद सबसे आसान है, जबकि बोलना सबसे मुश्किल है। बच्चे जो पढ़ते हैं उसे समझने में एवं जो समझते हैं उसे बोलने में असमर्थता के कई कारण हो सकते हैं। लेकिन हमारे स्कूल के बच्चों के लिए स्पष्ट कारण यह है कि उनके पास कक्षाओं के बाहर अँग्रेज़ी का वातावरण और बोलने का अभ्यास करने का मौका बहुत कम है या बिल्कुल नहीं है। इसका अर्थ है कि जो उन्होंने सीखा है उसका प्रयोग करने के लिए शायद स्कूल ही एकमात्र जगह है इसलिए जब वे यहाँ हैं तब उन्हें बहुत अभ्यास की आवश्यकता है।

इसने मेरे दिमाग में निम्नलिखित प्रश्न उठाए :

अँग्रेज़ी सीखने का वातावरण निर्मित करने और कक्षा में विद्यार्थियों की संलग्नता एवं व्यक्तिगत भागीदारी को बढ़ाने के लिए क्या किया जा सकता है?

कौन-सी विधि चुनी जाए?

जिस कक्षा में विभिन्न रुचियों और अधिगम-स्तर के बच्चे हों उस कक्षा को आपस में कैसे जोड़ा जाए और कैसे व्यक्तिगत समावेशी विकास को भी सुनिश्चित किया जाए?

प्रत्येक विद्यार्थी की रुचि के अनुसार गतिविधियों को शामिल करते हुए पाठ योजनाओं को कैसे विकसित किया जाए?

इस समय कक्षाओं और बच्चों के अवलोकन के मेरे अनुभव ने मुझे इस निष्कर्ष पर पहुँचाया कि 'भाषा को बाहर जाने से पहले अन्दर आना होगा'। बच्चों के शब्द-भण्डार को विकसित करना मुझे इसे ध्येय को प्राप्त करने में मदद कर सकता है। और मैं यह स्वीकार करती हूँ कि विदेशी भाषा को सीखने के तरीक़ों में से एक सुनना है – सुनना बच्चों के सीखने के स्रोतों में से एक है। मैं उनके अधिगम को दिलचस्प बनाने का सबसे अच्छा तरीक़ा चुनना चाहती थी और इसीलिए मैंने अपने द्वारा सीखी गई बातों का अन्वेषण एवं परीक्षण करना शुरू किया ताकि बच्चों द्वारा द्वितीय भाषा के कौशलों को अर्जित करना सुनिश्चित किया जा सके।

सुनने की क्षमता पर केन्द्रित जो गतिविधियाँ डिज़ाइन की गईं उनमें से एक थी- तुकबन्दी वाली रचनाएँ। किसी भी उम्र के बच्चे कविता और तुकबन्दी वाली रचनाएँ गाना पसन्द करते हैं। शब्द-भण्डार निर्मित करने की दिशा में मेरा पहला क़दम था इन रचनाओं को गाना और दोहराना, जिसने बच्चों को भाषा, ध्वनि, आरोह-अवरोह एवं लय को महसूस करने के लिए प्रोत्साहित किया। रचनाएँ ऐसी चुनी गईं जिन में चित्र और गति का संयोजन था जिससे शब्दों और उनके अर्थ के बीच सम्बन्ध स्थापित करने में मदद मिली। मैंने इंटरनेट के माध्यम से तुकबन्दी वाली रचनाओं को ढूँढा और पाठ के अनुसार उनका चयन किया। मुझे शरीर के अंगों को पढ़ाना था इसलिए मैंने; रचना चुनी *'टू लिटिल आइज़ टु लुक अराउंड'*, जबकि *'व्हाट्स द वेदर लाइक टुडे?'* ने कपड़ों और मौसम की अवधारणा को आपस में जोड़ा। इस तरह, तुकबन्दी वाली रचनाएँ मेरी कक्षाओं में अवधारणाएँ सिखाने के लिए एक साधन बन गई हैं। इन पद्यकों रचनाओं के माध्यम से मैंने बच्चों को संज्ञा शब्द, क्रिया शब्द और वाक्य संरचनाएँ समझाने की कोशिश की है। केवल तुकबन्दी वाली रचनाओं के माध्यम से, इन वाक्यांशों- *मैं हूँ, मैं कर सकता हूँ, मुझे पसन्द है*, का प्रयोग विद्यार्थियों को बड़ी आसानी से समझाया गया।-

> लिटिल बर्ड कैन यू क्लैप?
> नो आय काँट, काँट क्लैप।
> लिटिल बर्ड कैन यू फ्लाय?
> यस आय कैन, कैन फ्लाय।

एक और साधन कहानियाँ रही हैं, जिनसे न केवल भाषा-शिक्षण में, बल्कि बच्चों की कल्पना को विस्तार देने और अन्य विषयों से सम्बन्धित नई अवधारणाओं से बच्चों का परिचय कराने में भी मदद मिली। बच्चों को कहानियाँ सुनाते समय शारीरिक हाव–भावों का व्यापक प्रयोग ज़्यादा प्रभावी साबित हुआ है। मुझे संगीत और रंगमंच में रुचि है, इससे कहानियों की प्रभावी प्रस्तुति में मदद मिली। जानवरों, विज्ञान और परम्परा-सम्बन्धित कहानियों की तरफ़ बच्चों का ध्यान आकर्षित हुआ। बच्चे पात्रों के बारे में प्रश्न करते और कहानी के विषय को सरल वाक्यों में पूछते थे साथ ही गर्मी की छुट्टियों में कहानी के पात्रों का प्रतिरूपण करने से काफ़ी मदद मिली, ख़ासकर शब्द-भण्डार विकसित करने में।

इन सभी गतिविधियों के लिए उचित नियोजन की आवश्यकता होती है। पाठ-नियोजन एक मेहनत वाला काम है जिसे समझने के लिए काफ़ी प्रयास और समय लगता है। मुझे यह समझ आया कि शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) की रूपरेखा बनाना बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसके साथ ही, वैकल्पिक योजनाएँ एवं शिक्षण सामग्री तथा भाषा पर प्रभुत्व, भाषा कक्षाओं के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। अँग्रेज़ी सीखने के लिए उचित वातावरण निर्मित करने के लिए मुझे कुछ अलग हट कर सोचने की ज़रूरत थी। रोल प्ले, भाषा के खेल, राय लेखन और ऐसे कई मज़ेदार असाइनमेंट ने मुझे बच्चों का ध्यान आकर्षित करने और एक विदेशी भाषा सीखने में रुचि उत्पन्न करने में सक्षम बनाया। दूसरा, पाठ के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, विभिन्न रुचि वाले समूहों के लिए अलग-अलग वर्कशीट तैयार की गई थीं। जो बच्चे अपनी कक्षा के अधिगम-स्तर तक नहीं पहुँच पाए थे उनका ध्यान खींचने पर विशेष ज़ोर दिया गया था। समूह-चर्चा, वीडियो स्क्रीनिंग, चित्र-मिलान (अवधारणा से सम्बन्धित)और शब्द-भण्डार विकसित करने जैसी गतिविधियाँ पुनर्रचित की गईं। पूर्व की कठिनाइयों की जगह आत्मविश्वास ने ले ली, मेरे उत्साह ने रंग दिखाना प्रारम्भ कर दिया था।

कक्षा में करके देखी गई गतिविधियों की फेहरिस्त काफ़ी लम्बी है जिनमें से मैं बहुत कम उदाहरणों और गतिविधियों का उल्लेख यहाँ कर पाई हूँ। कुछ बहुत सफल रहीं, तो कुछ को थोड़ी कम सफ़लता मिली। लेकिन मुझे ख़ुशी है कि मैं ख़ुद के बारे में और जान रही हूँ तथा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की कई सम्भावनाओं को खोज रही हूँ। हालाँकि मुझे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, मैं मुस्कुराते हुए और आगे बढ़ने के उत्साह के साथ इनका सामना करूँगी क्योंकि सीखने की प्रक्रिया कभी ख़त्म नहीं होती। अल्फ्रेड टेनिसन के यह कथन मेरा आदर्श वाक्य है, *"परिश्रम करना, खोजना, ढूँढ़ना और हार न मानना।"*

पूर्णिमा हेगड़े अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में 2016 में एसोसिएट के रूप में सम्मिलित हुई हैं। वर्तमान में वे अज़ीम प्रेमजी स्कूल, यादगीर, कर्नाटक में अँग्रेज़ी के शिक्षण से जुड़ी हुई हैं। उनसे poornima.hegde@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : सुजाता